दुर्लभ पाण्डुलिपियों में चित्रकला एवं शैली

ऋचा गुप्ता

एम.वी.ए., (व्यवसायिक कला)

कला एवं षिल्प महाविद्यालय, ललित कला संकाय
लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ
जन्मतिथिः 21.03.1992

विषयः

दुर्लभ पाण्डुलिपियों में चित्रकला एवं शैली

दुर्लभ पाण्डुलिपियों में भारतीय चित्रकला एवं शैली

प्रस्तावनाः भारतीय पाण्डुलिपियों का इतिहास अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। भारतीय पाण्डुलिपियों में हमारी संस्कृति, सभ्यता, धर्म के साथ–साथ चित्रकला एवं विभिन्न शैलियों के अद्वितीय दर्शन मिलते हैं। अंग्रेजों द्वारा संस्कृत भाषा के अध्ययन के पश्चात् इसकी लोकप्रियता सत्रहवीं शताब्दी के अन्त एवं अठारवीं शताब्दी के आरम्भ में मानी जाती है। वह हस्तलेख (हाथों द्वारा लिखा गया) जो किसी एक या अनेक व्यक्तियों द्वारा लिखा गया हो पाण्डुलिपि कहलाता है। जैसे हस्तलिखित पत्र।

" जलाद्रक्षेत्तैलाद्रक्षेद्रक्षेच्छिथिलबन्धनात्।

मूर्खहस्ते न मां दद्यादिति वदति पुस्तकम्।।"

अर्थात् मुझे पानी, तेल एवं ढ़ीले बन्धन से बचायें एवं मुझे व्यर्थ में ही किसी को ना दें।

प्राचीन पाण्डुलिपियांः प्राचीन भारतीय पांडुलिपियों में कला, वास्तुकला, आयुर्वेद, ब्रह्म स्वरूप, बौद्ध, चौखंबा देवी, धर्म, शास्त्र, गीता हिंदू धर्म, इतिहास, होम्योपैथी, ज्योतिष, महाभारत, नृत्य, संगीत, तीर्थ, मनोविज्ञान, पुराण, रामायण, साहित्य, संतवाणी, तंत्र, वेद, उपनिषद, व्याकरण इत्यादि विषयों के पांडुलिपियॉ मिलती हैं जिन का विशाल संग्रह भारत को सम्पूर्ण विष्व में गौरवान्वित करता है। यह पांडुलिपियां पाली, जैन, फारसी एवं संस्कृत भाषाओं में मिलती है भारत के मानव संसाधन मंत्रालय, संस्कृति विभाग द्वारा इन पांडुलिपियों का संरक्षण किया जाता है जिनकी शाखाएं समस्त भारत के प्रमुख जनपदों में स्थापित हैं।

यह हस्तलिखित पांडुलिपियां राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा अधिग्रहित की गई हैं लगभग 14000 की संख्या वाली पांडुलिपियों का संग्रह विभिन्न भाषाओं में मिलता है जैसे पाली, प्राकृत, संस्कृत, हिंदी, फारसी, अरबी, चीनी बनी , तिब्बती आदि। इन पांडुलिपियों में विभिन्न धर्मों, आयुर्वेद, संस्कृति, इतिहास एवं कलाओं को दर्शाती हैं इन पांडुलिपियों बौद्ध जैन इस्लामिक, सिख, ईसाई धर्म से संबंधित चित्रों एवं उनके इतिहास की घटनाओं एवं गाथाओं के दर्शन मिलते हैं इसके अतिरिक्त राजस्थानी, मैथिली, अवधी, ब्रज और बुंदेली बोली के ग्रंथ और अन्य क्षेत्रीय साहित्य ग्रंथों का भी संग्रह इसमें सम्मिलित

है जिनमें लगभग 1000 से भी अधिक सचित्र पांडुलिपि हैं इन पांडुलिपियों की यह विशेषता है कि यहां अत्यंत ही दुर्लभ है और अक्सर शाही मोहरों और सम्राटों के हस्ताक्षर मौलिकता को प्रमाणित करती हैं सचित्र पांडुलिपियां हमारी अमूल्य धरोहर है एवं इनमें रचित भारतीय इतिहास की जानकारी हमारे लिए अमूल्य स्रोत हैं। रामायण, महाभारत एवं प्राचीन घटित युद्ध आदि प्राचीन विषयों से सम्बन्धित ज्ञान का समन्वय इनमें मिलता है।

ताड़पत्र की पाण्डुलिपियां: ताड़पत्र की पांडुलिपियां व्यवसायिक युग के प्रारंभिक शताब्दियों जितनी प्राचीन हैं। इन पांडुलिपियों को विभिन्न म्यूजियम एवं लाइब्रेरी में संरक्षित रखा गया है जैसे बड़ौदा में गायकवाड़, ओरिएंटल लाइब्रेरी, मैसूर में ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर दुर्लभ पांडुलिपि लाइब्रेरीज, अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकालयों इत्यादि।

पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेषन:

आज से लगभग 10 से 15 साल पहले इन पांडुलिपियों का आम व्यक्ति के लिए उपयोग में आना अत्यंत ही कठिन काम था किंतु समय के साथ–साथ टेक्नोलॉजी के द्वारा अब यहां संभव है आज के युग में डिजिटल माध्यम के द्वारा इन पांडुलिपियों का उपयोग करना आसान हो गया ह। आज के समय में इन पांडुलिपियों का हम कहीं से भी किसी भी स्थान से उपयोग कर सकते हैं राष्ट्रीय मिषन ऑफ पाण्डुलियों की स्थापना पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल विहारी वाजपेयी जी द्वारा सन् 2003 में की गयी थी जिसका उद्देष्य समस्त पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेषन करना था अर्थात् इन्हे स्कैन करके डिजिटल लाइब्रेरी द्वारा संरक्षित करना था जिस पर अभी भी काम चल रहा है। भारत की इन प्राचीन पांडुलिपियों में समस्त इतिहास जो कि बहुत ही विराट एवं विशाल है इस पर हमें गर्व करना चाहिए इन पांडुलिपियों के भंडार से भारत दुनिया में सबसे बड़ा भंडार के रूप में उजागर हुआ है।

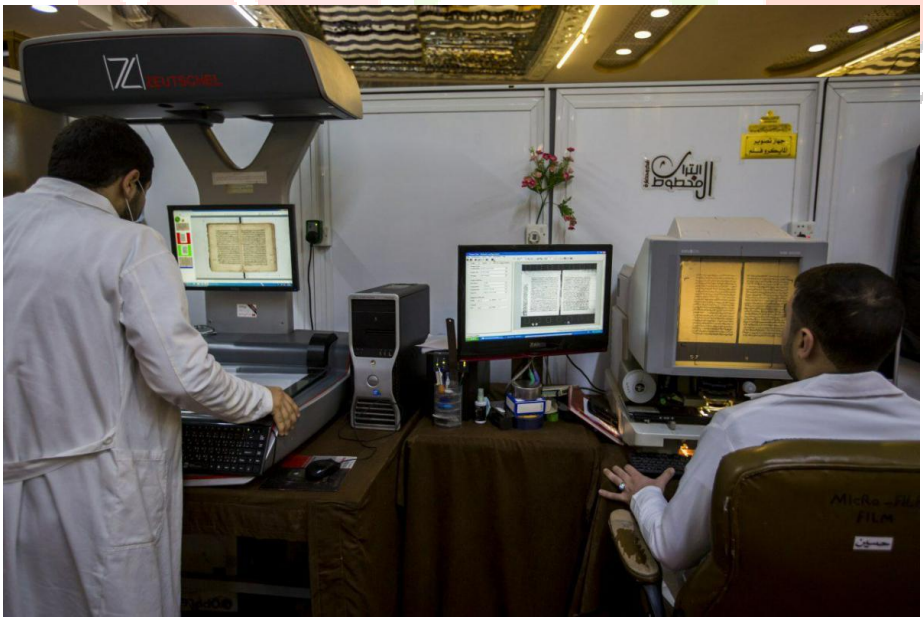

विभिन्न शैलियों में दुर्लभ पाण्डुलिपियां: किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का मूल्यांकन कला के माध्यम से किया जाता है कला सौंदर्य का सृजन करती है। भारत में कला का स्वरूप धार्मिक सामाजिक एवं राजनीतिक मान्यताओं के आधार पर समय के साथ परिवर्तित होता रहा है भारतीय कला प्रज्ञैतिहासिक काल से अनवरत विभिन्न शैलियों के रूप में प्रदर्षित है जोगीमारा, अजंता, बाघ, सित्तनवासन, एलोरा आदि प्राचीन कला केंद्र भारतीय कला इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ

रहे हैं। मध्यकाल की भारतीय कला लघु चित्रों के रूप में उपलब्ध है। राजस्थानी, पहाड़ी, ईरानी कला एवं मुगल कला शैली की विशेषताएं एवं विषय विभिन्न–विभिन्न इन शैलियों में विभिन्न स्वरूपों के प्रमाण मिलते हैं इस प्रकार समय आश्रित मानिक कला शैलियों के माध्यम से भारतीय कला की परंपरा विभिन्न रूप में विकसित होती रही तथापि मुगल साम्राज्य के पतन तथा राज्यों के अभाव में मध्यकालीन कलाकार संरक्षण की खोज में यह चित्र प्रस्थान करने लगे।

बंगाल की पट चित्रः बंगाल के पट चित्रों का संबंध प्रतिदिन के प्रयोग से रहा है यह कला सरल है तथा मानव द्वारा समझेंगे प्रकृति के साथ भूत तत्वों की अभिव्यक्ति है इसमें प्रकृति की यथार्थ प्रतिकृति नहीं है बल्कि चारों ओर के वातावरण से मानव मन में उठे संवेओ की सीधी अभिव्यक्ति है। इस शैली के चित्र टेंपरा माध्यम में गहरे व भड़कीले रंगों में बनाए जाते थे। इनका रेखांकन मोटा गतिशील रहता था जिसके आसपास गहरी छाया की जाती थी। चित्र फलक के रूप में कागज कपड़े या कपड़े के कागज एवं कैनवास का प्रयोग होता था। टाट पर गोबर एवं मिट्टी का छना हुआ गाढ़ा लेप लगाकर सूखा लिया जाता था उसके बाद इसे घोटकर चिकना करके चित्रण किया जाता था और एक गहरी पट्टी पर लपेट लिया जाता था या कटवा लिया जाता था और इन पट चित्रों को बनाने वाले पटवा कहलाते थे यह कला शैली बंगाल की लोक कला के रूप में जानी जाती है।

उड़ीसा के पट चित्रः यह शैली मुगल दक्षिण तथा विजयनगर शैलियों के आंशिक प्रभाव से 17वीं शताब्दी में विकसित हुई। इस शैली की विषय वस्तु में राधा–कृष्ण एवं प्रकृति के विभिन्न मनोरम दृश्यों का प्रभाव दिखता है इनमें कंपनी शैली तथा बंगाल के पट चित्रों का भी प्रभाव सम्मिलित है।

COLOURED ILLUSTRATED MANUSCRIPT WITH PAINTED COVER

राजस्थानी पटचित्रः राजस्थान में नाथद्वारा राजस्थानी पटचित्रों का प्रमुख आकर्षण है श्री नाथजी जो कि भगवान कृष्ण का ही एक रूप है लाखों यात्री दर्शनार्थ यहां आते हैं तथा नाथद्वार जी के चित्र ले जाते हैं श्रीनाथजी के चित्रों को चित्रित करने के लिए गिलहरी, बकरी, सुअर, भगोड़े की गर्दन के बालों से किया जाता है, उसके बाद टेंपरा पद्धति द्वारा रंग करके छाया प्रकाश का प्रभाव देकर चांदी व सोने के वर्क का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है अंत में इसे चिकने पत्थर पर उल्टा रखकर घोटा जाता है जिससे कागज से कपड़े का खुदरापन खत्म हो जाता है और चमक आ जाती है इन चित्रों में धोती, जूते , खड़ाऊ साड़ी, घाघरा, बैल, तोता, मोर, बगुला, सारस, मछली, गुलाब एवं कमल पुष्पों व वृक्षों का अंकन अद्वितीय है।

तंजौर के पट चित्रः यह पटचित्र हिंदू धर्म पर आधारित हैं इन चित्रों में श्री विष्णु जी तथा कृषि से संबंधित चित्रों का प्रयोग अधिक हुआ है जिसमें कृष्ण जी के जीवन से संबंधित घटनाएं प्रिय विषय है इन चित्रों का निर्माण पूजा के लिए किया जाता था जिसके फलस्वरूप इन्हें पूजा गृह में ही संरक्षित रखा जाता था इसके अलावा इन्हें अन्यत्र कहीं प्रदर्शित नहीं किया जाता था इन चित्रों की पृष्ठभूमि सदैव लाल तथा हरे रंग की ही रहती थी। आकृति का रेखांकन सुनहरे गहरे लाल रंग से करके चित्र की सजावट के लिए प्रयोग किया जाता था। इन चित्रों को बनाने में लगभग 20 दिन का समय

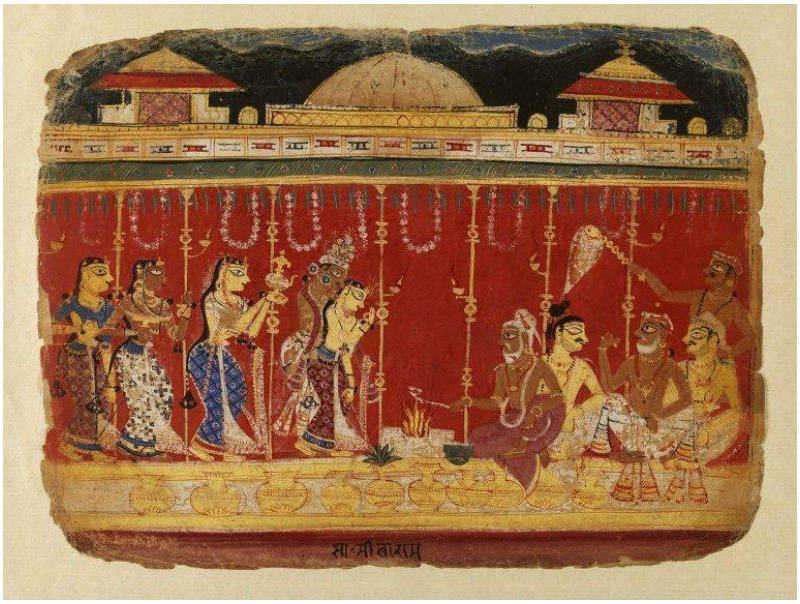

लगता था

निष्कर्षः इस प्रकार से हम देखते हैं कि भारतीय चित्रकला एवं शैली के दर्षन प्राचीन काल से ही है। जो हमारी अमूल्य धरोहर हैं। इन्ही पाण्डुलिपियों के साक्ष्यों के आधार पर भारत की अनोखी, अद्वितीय एवं विराट संस्कृति, सभ्यता, कला एवं शैलियों की दृष्टि से सम्पूर्ण विष्व में भारत सदैव गौरवान्वित रहेगा। यह पाण्डुलिपियां आज के मानव को प्राचीन इतिहास से रूबरू कराती हैं एवं देष के इतिहास के प्रति उत्सुकता पैदा करती हैं। अतः इन पाण्डुलिपियां का सुरक्षित एवं डिजिटलाइजेषन करना देष की बड़ी जिम्मेदारियों में से एक है।

संदर्भः 1. भारतीय कला का इतिहास – डॉ0 ममता चर्तुवेदी

2. समकालीन कला– डॉ0 ममता चर्तुवेदी

3. समाचार पत्र 'द हिन्दू'

4. गूगल

5. राजकीय अभिलेखागार, उत्तर प्रदेष।

सारः भारतीय चित्रकला एवं शैली के दर्षन प्राचीन काल से ही है। जो हमारी अमूल्य धरोहर हैं। इन्ही पाण्डुलिपियों के साक्ष्यों के आधार पर भारत की अनोखी, अद्वितीय एवं विराट संस्कृति, सभ्यता, कला एवं शैलियों की दृष्टि से सम्पूर्ण विष्व में भारत सदैव गौरवान्वित रहेगा।

कीवर्ड्सः हस्तलेख, डिजिटलाइजेषन।

ऋचा गुप्ता
एम.वी.ए., (व्यवसायिक कला)

कला एवं शिल्प महाविद्यालय, ललित कला संकाय
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
जन्मतिथि: 21.03.1992